19

हर मसीही के लिए ''प्रोत्साहन की एक बात''

(10:19-25)

''प्रतिबिम्ब और असली स्वरूप'' पर हमारा पाठ मुख्यतया इब्रानियों की पुस्तक का धर्मशास्त्रीय भाग था। पुस्तक के रह गए 3½ अध्यायों में लेखक का उद्देश्य अपनी कही बातों की व्यावहारिक प्रासंगिकता बनाना था। हमारे सिखाते समय एक अनकहा प्रश्न रह ही जाता है कि ''ये सच्चाइयां हमें कैसे प्रभावित करें?'' यदि मसीहियत यहूदी धर्म से श्रेष्ठ है, तो हमें अपने जीवनों में क्या फर्क लाना चाहिए। वचन पाठ हमें यही बताने वाला है!

व्यावहारिक शिक्षा एक परिचय के साथ आरम्भ होती है, जिसमें 10:19-25 पहले आने वाले की समीक्षा करता है और बाद में आने वाले का पूर्वानुमान लगाता है। इन आयतों से पता चलता है कि इब्रानियों की पुस्तक को मेरा ''प्रोत्साहन की एक बात'' कहने से क्या अभिप्राय है। याद रखें कि ''प्रोत्साहित करने'' का अर्थ *तसल्ली और बल* देना हो सकता है, या इसका अर्थ *समझाना और विनती करना* हो सकता है।[1]

हमें तसल्ली और बल देने वाली बात (10:19-22)

इब्रानियों 4:14-16 में हमने सीखा कि यीशु एक हमदर्द महायाजक है। इसलिए हम ''अनुग्रह के सिंहासन के सामने हियाव बांधकर'' आ सकते हैं ''कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे'' (आयत 16)। हमारा वर्तमान वचन पाठ अध्याय 4 के विचार को विस्तार देता है। यहां तक पत्री में स्वर्गीय तम्बू या यीशु के लहू की चर्चा नहीं है; परन्तु 10:19-22 की तसल्ली की बातों में ये दोनों विषय पाए जाते हैं।

यीशु के बलिदान के कारण हम परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं (10:19)। लेवीय महायाजक (लेवी जो हारून की सन्तान में से होता था) भय और कम्पकपी के साथ परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता था, परन्तु हम परमेश्वर की उपस्थिति में हियाव के साथ आ सकते हैं क्योंकि ...

- यीशु ने हमारे लिए रास्ता खोल दिया (आयत 20)। यह पुराने नियम के मृत बलिदानों के ढंग के विपरीत, एक जीवित *ढंग* है।
- यीशु हमदर्द महायाजक है (आयत 21)। वह ''परमेश्वर के घर पर'' जिसमें पृथ्वी पर परमेश्वर का घर (कलीसिया) और स्वर्ग में प्रवेश का घर है (देखें इफिसियों 3:15)।

- यीशु के लहू ने हमें हमारे पापों से शुद्ध कर दिया। हमारे विवेक शुद्ध हैं (आयत 22; देखें 9:14)।

हमें समझाने और विनती करने वाली बातें (10:22-25)

आयत 22 से वचन हमें करने और वह बनने को प्रोत्साहित करता है, जो हमें करना और बनना चाहिए। हमें बताया गया है, ''*क्योंकि* ये बातें [आयतें 19-21 में] इस प्रकार हैं, तो आओ यह या वह करें [आयतें 22-25 में]।'' बाइबल के लेखक को वाक्यों का आरम्भ ''आओ'' के साथ करना अच्छा लगा। 22 से 25 आयतों में हमें ''आओ'' तीन बार मिलता है।

''निकट आएं'': आराधना करें (10:22)

मसीहियत की तुलना में यहूदी धर्म कम आश्वासन देता था। यीशु के द्वारा हमें आश्वासन *मिला* है। जब हमारी देहें बपतिस्मे के पानी में से बाहर आती हैं तो हमारे हृदय को पाप से शुद्ध कर दिया गया होता है और हम अपने परमेश्वर की आराधना करने को तैयार होते हैं!

''दृढ़ता से थामे रहें'': वफ़ादार बनें (10:23)

पत्री डगमगाते हुए मसीही लोगों के नाम थी। इसने उन्हें डगमगाना छोड़ उन सब कामों पर ध्यान करने का आग्रह किया, जो परमेश्वर ने उनके लिए किए थे। वे परमेश्वर पर भरोसा कर सकते थे, क्योंकि उसकी प्रतिज्ञाएं सच्ची हैं।

''आओ एक-दूसरे ... की चिन्ता करें'': एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें (10:24, 25)

स्पष्टतया जिन लोगों के नाम पत्र लिखा जा रहा था, वे अपने साथी मसीही लोगों की चिन्ता न करते हुए स्वार्थी हो रहे थे। उन्हें *दूसरों को* प्रोत्साहित करने का ध्यान करना आवश्यक था (आयत 24)।

दूसरों को प्रोत्साहित करने का एक ढंग कलीसिया की सभाओं में वफ़ादारी से भाग लेना है। प्रभु ने हमें आत्मिक ''एकांतप्रिय'' होने के लिए नहीं बनाया। हम मसीह की देह के अंग अर्थात ''एक-दूसरे के अंग'' हैं (इफिसियों 4:25)। आराधना के लिए इकट्ठा होने पर हम दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं। जब हम ऐसा नहीं कर पाते तो हम उन्हें निराश करते हैं। इब्रानियों 10:19-21 पहली सदी के विशेष मसीही लोगों के लिए प्रोत्साहन की एक बात के रूप में लिखी गई थी। तौभी मुझे और आपको भी उसी संदेश की आवश्यकता है। मसीही लोगों के रूप में हमें प्रोत्साहित होना आवश्यक है क्योंकि (1) ''हमें यीशु के लोहू के द्वारा पवित्र स्थान [स्वर्ग] में प्रवेश करने का हियाव हो गया है'' (आयत 19), (2) हमें ''उस नये और जीवते मार्ग से जो उसने ... अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है'' मिला है (आयत 20), और (3) ''हमारा ऐसा महान याजक [यीशु] है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है'' (आयत 21)। इसलिए हम ''सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप'' जाएं (आयत 22), (2) ''अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे'' रहने (आयत 23) और (3) ''प्रेम,

और भले कामों में उकसाने के लिए एक-दूसरे की चिन्ता'' (आयत 24) करने को प्रोत्साहन या हियाव मिलता है।

टिप्पणी

[1]इस शृंखला के परिचय पाठ ''प्रोत्साहन की एक बात'' में ''ताड़ना'' के नोट्स पर विचार करें (इब्रानियों 13:22)।

इब्रानियों 10:25 पर एक निकट दृष्टि

''न छोड़ें।'' यूनानी शब्द के अनुवाद ''छोड़ें'' का अर्थ ''पीछे छोड़ना, त्यागना'' हो सकता है। 13:5 में इसका इस्तेमाल इसी अर्थ में हुआ है और कइयों का मानना है कि यहां इसका यही अर्थ है (NIV; बार्कले) यदि ऐसा है तो पवित्र शास्त्र पूर्ण विश्वास त्याग का लक्ष्ण बता सकता है। परन्तु, नील आर. लाइटफुट ने लिखा है, ''... यदि लेखक विश्वास त्याग की बात कर रहा है, तो वह इसे कइयों की आदत के रूप में कैसे कह सकता है?''[1] आयत 26 विश्वास त्याग की बात करती है तो आयत 25 विश्वास त्याग से बचने के ढंगों की बात करती है: ''एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक-दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखें त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो'' (तुलना 2:1-4)। RSV में है ''इकट्ठे मिलने को नज़रअन्दाज़ न करें ...।''

''*एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना*'' सामूहिक आराधना की बात है। ''इकट्ठा होना'' का अनुवादित शब्द उस शब्द का क्रिया रूप है, जिससे ''आराधनालय'' के लिए ''सिनागोग'' शब्द मिला है। और यह शब्द मूल पाठकों की यहूदी पृष्ठभूमि की झलक देता है। आरम्भ से ही मसीहियत में सार्वजनिक सभाओं का महत्व रहा है (देखें प्रेरितों 2:42; 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1, 2; याकूब 2:2-4)। जब कोई व्यक्ति मसीही बन जाता है तो वह कलीसिया के नाम की किसी चीज़ का भाग बन जाता है। कलीसिया के सम्बन्ध का एक महत्वपूर्ण भाग अध्ययन के लिए, आराधना के लिए और संगति के लिए इकट्ठे होना है। मसीही लोग जो एक-दूसरे से प्रेम करते थे, इकट्ठे होना चाहते थे। जब देह का कोई सदस्य उस इकट्ठा होने को नज़रअन्दाज़ करने लगता है तो गड़बड़ा है।

''*जैसे कि कितनों की रीति है।*'' ''[तुम *में से*] कितने को'' समझा जाना चाहिए। अपनी सभाओं की अनदेखी करने के लिए इन मसीही लोगों को किस बात ने प्रेरित किया। सम्भवतया आज आराधना में भाग न लेने की हर प्रेरणा तब भी थी। परन्तु संदर्भ कुछ विशेष कारणों का सुझाव देता है: उदाहरण के लिए, 10:32-34 सताव की बात करता है। इसके अलावा यहूदी मसीही लोगों पर यहूदी धर्म में वापस जाने का दबाव भी था। उन्हें साथी यहूदियों द्वारा मसीही समुदाय से दूरी बनाए रखने अर्थात उनके साथ इकट्ठा न होने (देखें 10:25) और मसीही अगुओं की बातों पर ध्यान न देने (देखें 13:7, 17) के लिए प्रोत्साहित किया जाता होगा।

''*पर एक-दूसरे को समझाते रहें*'' का अर्थ दूसरों को आराधना सभाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना नहीं बल्कि दूसरों को प्रोत्साहित करने के लिए स्वयं भाग लेना है। पिछली आयतें (10:19-22) आराधना से निजी लाभ लेने का सुझाव देती हैं, परन्तु यह आयत बताती

है कि हमें दूसरों को लाभ देने के लिए इकट्ठे होने की आवश्यकता है। डॉन लिंगनबर्ग की नकल करने की अच्छी आदत है। हर सभा से पहले वह उन लोगों की सूची बनाता है जिन लोगों को प्रोत्साहित करना चाहता है। कई बार इकट्ठा होने पर वह उनमें से प्रत्येक से कहता है, ''मेरे ख्याल से आप भले व्यक्ति हैं और में आपको इस हफ्ते परमेश्वर के लिए जीने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूं।''

''*और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखें।*''''दिन'' सम्भवतया प्रभु के दिन (रविवार) को नहीं कहा गया। कइयों का मानना है कि ''दिन'' यरूशलेम के विनाश के दिन को कहा गया है। नये नियम में ''दिन'' का एक और सामान्य अर्थ मसीह की वापसी और अन्तिम न्याय का दिन है। निश्चय ही हमारे दृष्टिकोण से ''निकट आता हुआ दिन'' तो ''अन्त का दिन'' ही है। हमारा एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना समय के साथ-साथ और गम्भीरता से होना चाहिए ताकि हम उस भड़े दिन के लिए सब तैयार हो जाएं।

टिप्पणी

[1]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 191.